F-5
D.El.Ed. 1st year

इकाई - III | Date :- 11.05.2020

Topic :- भाषा सीखना : नोम चोमस्की

इन वाक्यों के आधार पर वह सामान्यीकरण करते हुए नियम बनाता है कि लड़कों (पुल्लिंग) के लिए 'आ' से समाप्त होने वाला शब्द (क्रिया) आएगा जबकि लड़कियों (स्त्रीलिंग) के लिए 'ई' से समाप्त होने वाले शब्दों (क्रिया) का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह वह अपनी भाषा में लिंग भेद करना प्रारंभ कर देता है। लेकिन जिन भाषाओं में लिंग-व्यवस्था (स्त्रीलिंग-पुल्लिंग) नहीं होती है ~~इसके~~ बच्चे हिन्दी भाषा के प्रयोग के समय लिंग-भेद नहीं कर पाते, क्योंकि इन्होंने अपनी भाषा बोली में वह व्यवस्था सुनी ही नहीं। जैसे बंगला ऐसी भाषाएँ है जिनमें क्रिया शब्दों में लिंग-भेद नहीं होता। अब आप सोच रहे होंगे कि बच्चे के इस 'लघु व्याकरण' का विस्तार होता है कि नहीं। हाँ बच्चा अपने भाषिक आंकड़ों के आधार पर 'लघु व्याकरण' का विस्तार करता है, नियम बनाता है। कभी-कभी भिन्न परिस्थिति में सुने गए भाषिक आंकड़ों के आधार पर पहले से बने नियमों में परिवर्तन भी करता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बच्चे में भाषा सीखने की अनंत संभावनाएँ है, जरूरत है उन्हें समुचित भाषायी परिवेश देने की।

नोमचोम्स्की द्वारा प्रस्तावित नेटिववादी सिद्धांत, तर्क देती है कि भाषा एक अद्वितीय मानवीय उपलब्धि है। इस सिद्धांत में सभी बच्चों को एक सहज भाषा अधिग्रहण डिवाइस (एल.ए.डी) कहा जाता है। सैद्धांतिक रूप से, एल.ए.डी मस्तिष्क का एक क्षेत्र है जिसमें सभी भाषाओं के लिए सार्वभौमिक वाक्य विन्यास नियम है। यह उपकरण सीखी शब्दावली का उपयोग करके वाक्य बनाने की क्षमता वाले बच्चों को प्रदान करता है। चोमस्की का दावा यह विचार है कि जो बच्चे सुनते है - उनका भाषाई इनपुट - यह समझाने के लिए पर्याप्त नहीं है कि वे भाषा कैसे सीखते है। उनका तर्क है कि पर्यावरण से ~~भाषाई~~ भाषाई ~~व~~ इनपुट सीमित और त्रुटियों से भरा है इसलिए, बच्चों के लिए अपने वातावरण से भाषाई जानकारी सीखना असंभव है।

P.T.O